4

कथावाचन की शैलियाँ*

हरि कृष्ण देवसरे

संप्रेक्षण के विभिन्न माध्यमों में से कथा-वाचन भी एक सशक्त माध्यम रहा है। इसके द्वारा न सिर्फ़ मनोरंजन बल्कि आशातीत संदेशों का भी इज़हार होता है। कथा-वाचन की पौराणिक परंपरा हमारे देश में रही है उन्हीं में से कुछ का उल्लेख इस आलेख में किया गया है।

बच्चों को कहानी सुनाना एक कला है। यह एक विश्वव्यापी कला है। लोरियाँ और कहानियाँ बालसाहित्य की ऐसी विधाएँ हैं, जो हर देश में और हर भाषा में अपनी समृद्ध परंपरा के लिए जानी जाती हैं। शायद यह परंपरा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। जब आवागमन के साधन न थे, वनों या अनजान शहरों से होकर जाना खतरे से खाली न होता था। समुद्री जहाज़ों तक को समुद्री डाकू लूट लेते थे। प्राकृतिक परिस्थितियों का लोगों को ज्ञान न था। बादल का गरजना, बिजली का कड़कना, समुद्र की लहरों का गरजना, बाढ़, आँधी-तूफान, आग, भूकंप, सूखा आदि प्राकृतिक बातों का कोई वैज्ञानिक कारण मालूम न था। इसलिए लोगों ने हर जगह अपने-अपने अनुमान से अपनी भाषाओं में तरह-तरह की धार्मिक कथाएँ और लोककथाएँ गढ़ ली थीं। बादलों को इंद्र के भेजे दूत कहना या बिजली को इंद्र का वज्र फेंकना, पृथ्वी को सिर पर सँभालने वाले चार हाथियों (दिक्पाल) का सिर हिलाना और भूकंप आना- जैसी बातें इसी कारण प्रचलित हो गई थीं।

उस ज़माने में जब कहानी सुनने की परंपरा शुरू हुई होगी, लोगों ने बच्चों को सबसे पहले अपने इन्हीं अनुभवों और ज्ञान के आधार पर कथाएँ गढ़कर सुनाई होंगी। तब गर्मी की तारों भरी रात हो या अलाव के चारों ओर बैठकर सर्दी की लंबी रातें हों– लोग जीवन के अनुभव आने वाली पीढ़ियों को कथा के रूप में सुनाते थे– या यूँ कहें कि उन्हें अपने अनुभव सुनाने के लिए जिस भाषा, भाव, नाटकीयता, रहस्य और रोमांच की ज़रूरत होती थी– उसका पूरा प्रयोग वे लोग करते थे और इस कारण वह एक पूरी सफ़ल कथा बन जाती थी।

कहानी सुनने की कला और जीवन के अनुभवों से जुड़ी ये कहानियाँ धार्मिक मिथक कथाओं और लोक कथाओं के रूप में सदियों तक मौखिक रूप से चली आईं और उनमें निरंतर सुधार होता गया, क्योंकि वे संस्कार,

* *पलाश* (जनवरी मार्च 2008), राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल से प्रकाशित पत्रिका से साभार

परंपरा से परिचित कराने और ज्ञान देने का सफ़ल माध्यम बन चुकी थीं। लिपि के विकास के पश्चात् साहित्य की जब रचना शुरू हुई तो कथा पुस्तकें लिखी गईं। यहाँ से कहानी को कहने की कला का विकास भी शुरू हुआ। कहानी सुनाकर ज्ञान देने और शिक्षित बनाने का सर्वप्रथम प्रयोग पंचतंत्रकार पंडित विष्णु शर्मा ने किया, जिसमें उन्होंने पशु-पक्षियों को वाणी दी और उन्हें मनुष्यों की तरह सोचने, व्यवहार करने और अपनी बात कहने का प्रयोग किया। यह एक अत्यंत प्रभावशाली शैली बन गई और यह लोक कथाओं में भी प्रयोग हुई। इस तरह कहानी सुनाने की कला का विकास हुआ। बाद में कथाकारों ने कथा कहने की कुछ शैलियाँ अपनाईं, जैसे 'सिंहासन बत्तीसी' में बत्तीसों पुतलियों (हर पाए की शक्ल एक पुतली की थी) को एक-एक कर बोलते और कहानी सुनाते हुए प्रस्तुत किया गया। इसमें शैलीगत दूसरी विशेषता यह थी कि पुतली राजा भोज से कहानी के अंत में सवाल पूछती थी। शर्त यह थी कि यदि राजा भोज कहेगा कि 'ना, मैं ऐसा न करता' तो वह उस दिन सिंहासन पर नहीं बैठ सकता था। इस तरह एक-एक पुतली ने बत्तीस कहानियाँ सुनाई, जिनके उत्तर राजा भोज ने पूरी ईमानदारी से दिए और कहा कि 'ना, मैं ऐसा न करता।' इसके बाद सिंहासन आकाश की ओर उड़ गया। और राजा भोज विक्रमादित्य के सिंहासन पर कभी न बैठ सके। हमें इस घटना की ऐतिहासिकता पर जाने की आवश्यकता नहीं है। यह कथा लेखक की कल्पना और शैली की विशिष्टता ही कहनी चाहिए कि इतनी रोचक कथा की पुस्तक 'सिंहासन बत्तीसी' (मूल पुस्तक संस्कृत में है) की रचना हुई, लेकिन इसके ठीक विपरीत और संभवत: इससे पहले के काल की कथा 'बेताल पच्चीसी' है, जिसमें 'पच्चीस कहानियाँ' है। इसमें विक्रमादित्य पेड़ पर लटके हुए बेताल को उठाकर जब चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए चलता है, तो बेताल (मुर्दा जो बोलता है) एक शर्त रखता है। शर्त यह है कि बेताल राजा विक्रमादित्य को एक कथा सुनाए। कथा के अंत में वह एक प्रश्न पूछेगा। यदि विक्रमादित्य ने 'हाँ' या 'सही' जवाब दे दिया तो बेताल वापस पेड़ पर चला जाएगा। बेताल ने यह शर्त इसलिए रखी, क्योंकि वह जानता था, कि राजा विक्रमादित्य को यदि सही उत्तर मालूम है, तो वह कभी 'ना' नहीं कहेगा। केवल अंतिम कहानी में उन्हें ना कहना पड़ा और तब बेताल उसके साथ गया। इस तरह प्रश्न के उत्तर में 'हाँ' और 'ना' के महत्त्व वाले कथा कथन की यह दूसरी शैली थी।

एक तीसरी शैली थी- पूत बुलाकी की। कोई बुलाकी साहब थे, जो यात्राएँ बहुत करते थे। वे घोड़े पर चलते थे और उनका नौकर साथ-साथ पैदल चलता था। जब वे किसी शहर में आकर ठहरते, तो नौकर को बाज़ार से आटा, दाल, सौदा-सुलफ़ लाने के लिए पैसे देते। नौकर शहर के बाज़ार में जाता तो एक न एक घटनात्मक समस्या लेकर लौटता। उसे आने में देर हो जाती थी, तो वह पूत बुलाकी से वह घटना या समस्या सुनाकर पूछता, 'मेरी

समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों होता है या हुआ?' पूत बुलाकी कहते, 'अच्छा-अच्छा... जा! पहले रोटी-पानी बना। मुझे खाना खिला। फिर जब हम आराम करेंगे, तो पुटपुटी लगाना (पैर दबाना), तब बताऊँगा कि वह सब क्यों हुआ।' जब तक खाना पकता, पूत बुलाकी खाते और आराम करने के लिए लेटते, तब तक पूत बुलाकी वह कहानी गढ़ लेते जिसका अंत वह होता, जिसे नौकर बता चुका है, और इस तरह कहानी सुना देते। इस शैली में कहानी का अंत पहले ही मालूम तो हो जाता है, लेकिन वह सब क्यों हुआ, वह 'रहस्य', अंत की तुलना में कहीं ज़्यादा सशक्त बन जाता है। इस कारण कहानी सुनने की पूरी उत्सुकता बनी रहती है कि वैसा अंत क्यों हुआ।

कहानी सुनाने की एक शैली 'अलिफ लैला' या 'अरेबियन नाइट्स' की है। उसमें राजा या बादशाह को नींद नहीं आती थी। इसलिए वह कहानी सुनने लगा, लेकिन उसकी शर्त थी कि यदि उसे नींद न आई और सवेरा होने से पहले कहानी खत्म हो गई, तो वह कहानी सुनाने वाले का सिर कटवा देगा और अगर कहानी खत्म न हुई तो उसे इनाम देगा। कई लोगों ने कोशिश की और अपने सिर कटवाए, क्योंकि तब तक 'किस्सागो' लोगों का चलन हो गया था, जो कहानियाँ सुनाते थे। आखिर एक लड़की किस्सागो ने यह चुनौती स्वीकार की। वह रोज़ रात को बादशाह को कहानी सुनाती, लेकिन वह इतनी चतुर और सफल किस्सागो थी कि वह एक कहानी में दूसरी और तीसरी कहानी इतनी खूबसूरती से जोड़कर इतनी लंबी कर देती थी कि सुबह हो जाती और वह कहती, 'देखिए हुज़ूर! सुबह हो गई और कहानी खत्म नहीं हुई।'

बादशाह कहता, 'हाँ, ठीक कहती हो, लेकिन मैं यह कहानी पूरी सुनना चाहता हूँ।' लड़की कहती, 'तो फिर आपको आज की रात का इंतजार करना होगा।' और लड़की उस दिन का इनाम लेकर चली जाती। इस तरह उस लड़की ने एक हज़ार रातों तक बादशाह को कहानियाँ सुनाई और अंत में बादशाह इतना खुश हुआ कि उसने उस लड़की से शादी कर ली।

कहानी सुनाने की एक अन्य शैली हमें अकबर-बीरबल के किस्सों में भी मिलती है, जिसमें हम अकबर द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर या प्रस्तुत की गई समस्याओं के हल पाते हैं। चतुराई और तुरंतबुद्धि जैसे गुणों के लिए भी ये कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध रही हैं और आज भी खूब कही-सुनी जाती हैं। ऐसा ही कुछ तेनालीराम के किस्सों में है।

कहानी सुनाने की और भी बहुत-सी शैलियाँ रही हैं और हो सकती हैं। यह अपने आप में शोध का विषय है। बांग्ला, उड़िया, तमिल, मराठी, गुजराती आदि अनेक समृद्ध भाषाओं में खोजने पर वे अवश्य विविध रूपों में मिल जाएँगी। एक शैली जो कि लगभग सभी भारतीय भाषाओं में समान रूप से पाई जाती है, वह है छोटे बच्चों को सुनाई जाने वाली पद्यात्मक कहानियाँ। इनमें कहानी तो गद्य में चलती है, किंतु वह 'पद्य' के सहारे आगे बढ़ती है। जैसे– लकड़ी के एक खूँटे में दरार थी। एक चिड़िया चने का दाना उस पर रखकर चोंच

मारकर फ़ोड़ने लगी कि दाल के दाने को आसानी से खा सकूँगी, लेकिन दुर्भाग्य कि वह दाना खूँटी की दरार में फँस गया। तो चिड़िया बढ़ई के पास गई और उसने पद्य में कहा कि 'बढ़ई! बढ़ई!! तू खूँट फाड़, चने का दाना निकाल, मैं खाऊँ क्या?' लेकिन बढ़ई ने डाँटकर भगा दिया कि मुझे इसके लिए फ़ुरसत नहीं है। तब वह राजा के पास गई। उसने बढ़ई वाले पद्य के साथ राजा से भी पद्य में कहा। राजा ने मना किया तो रानी के पास गई। यानी आगे वह जिस-जिस के पास जाती है, वह 'पद्य' के शुरू से दुहराती है, लेकिन अंतर इतना होता है कि शेष की बात वह 'भूतकाल' कहती है। जैसे- 'बढ़ई खूँटा नहीं फाड़ता, राजा उसे हुक्म नहीं देता, रानी राजा को नहीं डाँटती।' आदि। अंत में जब सबसे छोटी चींटी मदद को तैयार होती है, तो वह हाथी को धमकाती है, हाथी पानी को, पानी आग को... और इस तरह पूरा पद्य उलटा होकर चलता है। दरअसल इस पद्य शैली की कथा में बच्चों को रहस्य और उत्सुक्ता का मज़ा आने के साथ बात को पद्य में कहने से अधिक आनंद आता है, क्योंकि कथा कथन में 'लयात्मकता' आ जाती है।

इस प्रकार कथा कथन की विभिन्न शैलियों और उनके गुणों को यदि आप विश्लेषित करें, तो स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों को कहानी सुनाने की कला न केवल विशिष्ट है, बल्कि उसके कुछ अनिवार्य तत्त्व भी हैं। बच्चों को कथा सुनाने वाले के लिए सबसे ज़रूरी है कि उसकी आवाज़ मधुर हो, उसमें आकर्षण हो, उसमें बच्चों के लिए अपनापन अनुभव कराने की क्षमता हो। इसके बाद कहानी सुनाने वाले का शब्द भंडार विपुल होना चाहिए और वह इतना सरल हो कि बच्चों को कहानी सुनते समय किसी शब्द का अर्थ तब तक न पूछना पड़े, जब तक वह कोई तकनीकी या विशिष्ट स्थान, वस्तु या व्यक्ति का द्योतक न हो। इसके बाद कथा सुनाने वाले का व्यक्तित्व इतना आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिए कि बच्चे उसके साथ बैठकर कहानी सुनने के लिए लालायित रहें। इतना ही नहीं, वह जो कहानियाँ सुनाए, उनमें ऐसे तत्त्व और गुण हों, जिन्हें बच्चे आत्मसात् तो करें ही, उनके कारण उसके पास बैठकर कहानी सुनना पसंद भी करें। इस सबके लिए बच्चों को कहानी सुनाने वाले को काफ़ी अभ्यास करना चाहिए।

बच्चों को कहानियाँ सुनना और उनकी प्रतिक्रिया को लगातार देखते रहना, उनके चेहरे के भावों को पढ़ते रहना, कथा कथन करने वाले को निरंतर करते रहना चाहिए।

❑❑❑